अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 7, Issue4, (October-December 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

# किन्नर का जीवन और समाज 'तीसरी ताली' उपन्यास के सन्दर्भ में

**जंगीर सिंह अतिथि सहायक प्राध्यापक,**
**पंजाबी विश्वविद्यालय, टी. पी. डी. मालवा कॉलेज ,**
**रामपूरा फूल, बठिण्ड़ा, पंजाब।**

**भूमिका** : –हिन्दी साहित्य में आदि काल से लेकर अब तक उपेक्षित और पिछड़ेविषय पर हिन्दी साहित्य में विमर्श होता रहा है। उपेक्षित विषयों कोसमाज में प्रताड़ना और समस्यों से जूझना पड़ा। ऐसे विषयों को हमेशा समाज के सम्मुख एक विशेष ढ़ंग से प्रस्तुत किया जाता रहा, चाहे वह दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, या फिर आदिवासी विमर्श ही क्यों न हो। इसी क्रम में चलते ही 'किन्नर–विमर्श' का नाम आता है।

**किन्नर शब्द का अर्थ** :–किन्नर शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है यथा किं+नर से सपष्ट है,अर्थात् उनकी योनि और आकृति पूर्ण रूप से मनुष्य की नहीं है। मूल : हम किन्नर उन लोगों को मानते हैं, जिनकी शरीरिक संरचना सम्भोग या प्रजनन की प्रक्रिया में असमर्थ हो। इसमें ऐसे लोग आतें हैं, जिनमें ना तो पूर्ण पुरुष के ना स्त्री के गुण होते हैं, उनकी भावना उनके शरीर के प्रतिकूल नहीं होती। उन्हें ही हम किन्नर कहतें हैं।इसे हमारा समाज हिजड़ा, समलैंगिक, लेस्बियन, उभयलिंगी, छक्का, खुसरा और थर्ड जेंडर के नाम से जानता हैं। लेकिन इसे हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में 'किन्नर' नाम दिया गया है।

सामान्यतः ऐसे लोगों को हमारा समाज स्वीकार नहीं करता। इनसे जुडी अनेक भ्रांति और भय इनकी दयनीय दशा का मुख्य कारण है। यदि इन्हें साहित्य और समाज में स्थान दे कर उभारा जाए तो वाक्य ही हिन्दी साहित्य में सराहनीय कार्य होगा। जो उनके जीवन के लिए सहायक तत्त्व बनेगा।

हिन्दी जगत् में 'किन्नर विमर्श' को लेकर कई रचनाएं हमारे सामने आती है जिसमें महेन्द्र भीषण की रचना 'मैं पायल', नीरजा माधव की 'यमदीप', लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी की रचना 'मैं हिजड़ा, मैं लक्ष्मी', चित्रा मुदग्ल की 'पोस्ट बॉकस नं: 203 नाला सोपारा' और प्रदीप सौरभ की रचना 'तीसरी ताली' प्रमुख है।

प्रदीप सौरभ पेशे से तो पत्रकार थे। लेकिन उनकी अनवेषण प्रवृति ने उन्हें यह तीसरे समाज के बार लिखने के लिए विवश कर दिया। इसमें किन्नरों के अनेक पहलुओं को छुआ है। उनकी शरीरिक संरचना, समाजिक संरचना, समाज से जुड़ी परम्पराएँ, उनके रीति–रिवाज और मान्यताओं इत्यादि के बारे में बारीकी से अंकन किया है।

Volume 7, Issue4, (October-December 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

**जैविक संरचना** :–किन्नरों को मुख्य रूप से चार शाखांए मानी जाती हैं। बुचरा, नीलिमा, मनसा और हंसा।

बुचरा–उसे कहा जाता है जो जन्मजात हिजड़ा हो। विनीता और निकिता इसके प्रमुख उदाहरण हैं। विनीता जो गोपाल की बेटी है वह रात के समय घर से भाग कर मुसीबतों का सामना करती हुई ब्यूटीयशन का कार्य आरंभ कर देती। निकिता जो आनन्दी की बेटी होती है लेकिन समाज के आस्वीकार होने के कारण हिजड़ों को सौंप दी जाती है। नीलिमा– जो स्वयं गरीबी, भूखमरी, पेट की आग, या पैसे की लालसा के कारण बन जाते हैं। जिसमें राजा और ज्योति जो पूर्ण पुरुष हैं। राजा तो एक कुशल नर्तक था। लेकिन वह अपने पुरुषतव को भूल चुका था। उसमें सखी भाव घर कर गया था। वह पेट की आग मिटाने के लिए दिल्ली 'डिम्पल' हिजड़े के डेरे में काम ढूढ़ते–2 चला जाता हैं। वहाँ उसकी मूलाकात मंजू नामक पूर्ण स्त्री जो डिम्पल की पालतीपूत्री है, उसके साथ होती है। उसके उकसाने से उसका पुरुषतव जाग जाता है। मंजू और राजा को प्रेम करने की सजा डिम्पल उन्हें देती है। मंजू की बच्चेदानी निकाल दी जाती है और राजा का पुरुषांग काट दिया जाता है। राजा होश आने के बाद '' किसी तरह लड़खडाते हुए वह चाणक्यपुरी पुलिस स्टेशन पहुँचा और अपनी आप–बीती इंस्पेकटर को सुनाई। पुलिस पार्टी तैयार होकर डिम्पल के डेरे की ओर रवाना हो गई।''[1] उसे जेल में बंद कर दिया। इसी तरह ज्योति भी पूर्ण पुरुष था लेकिन घर की गरीबी के कारण बाबू श्यामसुन्दर सिंह की लोण्डें बाजी का शिकार हो गया था। बाबू को छोड़ देने के बाद उसके घर खाने के लाले पड़ जाते हैं। इसी बीच उसकी मुलाकात बलिया के हिजड़ों की गद्दी के गुरु सोनम से हो गई। वह कहती है कि तुम पूर्ण पुरुष हो, मैं तुम्हें डेरे में नहीं रख सकती तो वह भावुक होकर कहता है कि ''तो हिजड़ा बना दो।.....बिना हिजड़े के भी तो हिजड़ा बना हुआ हूँ। जो अपने को मर्द कहते हैं, वे कौन से हिजड़ों से कम हैं। गरीब का बेटा हूँ, तो पूरे गाँव की भौजाई बन गया हूँ।''[2] मनसा– वे हिजड़े होते हैं जो शरीरिक रूप से पूर्ण परन्तू मानसिक रूप विपरीत लिंगी भाव रखते हों, यह स्वेच्छाधारी होते हैं। जिसकी उदाहरण अनिल है। जिसके सबंध सुविमल भाई के साथ थे। '' अनिल बचपन से ही पुरुष के संसर्ग का आदी हो चुका था। उसे भी औरत की गन्ध गुदगुदाती नहीं थी।''[3] हंसा– शरीरिक कमी के कारण बने हिजड़े को हंसा कहा जाता है। जो धन और लोभ लालच के कारण बनते हैं उन्हें 'अबुआ' कहा जाता है। अबुआ की उदाहरण एक मात्र 'गोपाल' की है। जो दौलत के लिए गद्दी पर दो–दो गद्दी वाले हिजड़ों को उसका शिकार होना पड़ा था।

**किन्नरों के रीति–रिवाज एवं परम्परा** :– प्रदीप सौरभ जी ने समाज में जुड़ी कई मान्यताओं और परम्परा की बात की है। वह एक चुनरी पहनाने की रस्म भी करते हैं। ''इस रस्म के बिना कोई भी

Volume 7, Issue4, (October-December 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

हिजड़ा समाज का हिस्सा नहीं बन सकता उन्हें नाच–गाने का धन्धा भी वह नहीं कर सकता।''[4] मुर्गावाली माँ की पूजा–अर्चना की जाती है। इसे हिजड़े अपनी इष्टदेवी मानते हैं। उसका भय खाते हैं। जब ज्योति सोनम को हिजड़ा बनाने के लिए कहता है तो वह साफ मना कर देती है कि ''मैं तुम्हें हिजड़ा नहीं बना सकती। भगवान ने तुम्हें पूरा आदमी बनाया है। वैसे भी हम भगवान से डरते हैं। किसी सही आदमी को हिजड़ा बनाना हमारे समाज में कुफ्र है।'' [5] यह शब्द समाज में फैले भय को खत्म करते हैं कि लोगों ने मान्यता बना रखी है के हिजड़े जबरन किसी को भी हिजड़ा बना देते हैं।

**किन्नर समाज की लोक कथाओं का चित्रण** :–तमिलनाडु के विल्लूपुरम जिले के कुवागम गाँव में वर्ष में एक वार उत्सव होता है। यहां मंगलसूत्र काटने की रस्म होती है। यह उत्सव लगभग 17 दिन चलता है। उत्तर से दक्षिण तक के हिजड़े यहाँ एक्टठे होते हैं। वैसे तो इनके अपने–अपने रीति–रिवाज और रस्में हैं। लेकिन इस उत्सव में वह सभ कुछ बुलाकर मिलते हैं। इन्होंने ने अपने सारे रिश्ते–नाते एक दुसरे के साथ बना रखे होते हैं। उत्सव में कथावाचक मेले के महात्मय का वर्णन स्तिार से करता है। मेले में आया हर हिजड़ा मेले के किसी भी पक्ष को छोड़ सकता था, लेकिन कथा सुनना परम्परा का अंग था। कथा न सुनने पर कुवागम–यात्रा अधूरी मानी जाती है।''[6] महाभारत की कथा में बताया जाता है कि कृष्ण एक मोहिनी का रूप धारण कर लेता है और अरवाण से विवाह कर लेता है, जिसे अर्जान का पुत्र माना जाता है। अरवाण की अंतिम इच्छा के अनुसार उससे संभोग करता है। अरवाण की मृत्यु के बाद कृष्ण विधवा की तरह विलाम करते हैं। इसी मान्यता को हिजड़ों का मानना है। वह भी एक दिन के लिए अरवाण से शादी करते हैं और फिर मंगलसूत्र तोड़ने की रस्म होती है।

**किन्नरों के संसकार और धार्मिक प्रावृति** :–हिजड़ों की शवयात्रा आज तक एक रहस्य का विषय ही बना हुआ है। लेकिन इस का किसी को पता भी नहीं चलता क्योंकि इनकी शवयात्रा के दौरान स्त्री हिजड़ीयाँ शमशान घाट में नहीं जाती। उनके गिरिया हिजड़े ही उसे दफनाते या जलाते हैं। इसकी उदाहरण सुरैया हिजड़ा है। जब उसे दफनाने के लिए जा रहे थे तो शलभ भदौरिया पत्रकार लेटनाइट ड्यूटी से आ रहा था, उसने देखा ''दो सफेद नकाब पहने जिन्न आगे–आगे उछलते चल रहे थे। उनके पीछे चार जिन्न थे। उसके पीछे करीब आठ जिन्न उसी तरह सफेद लबादा पहने फुदक रहे थे। बीच में एक जिन्न क्रास में बँधा हुआ था। एक लकड़ी उसके शरीर के बीचोबीच बँधी थी। तांकि वह लुढ़के नहीं और दूसरी लकड़ी उसके दोनों हाथों को सीधे किये हुए थी। क्रास में टँगे जिन्न की कमर में पत्ते बँधे थे। दो जिन्न उसके हाथों को पकड़कर उसे चलाते हुए ले जा रहे थे।'' [7] कई स्थानों पर किन्नर शव को घसीटते और चंपलों और जूतों से मार कर शमशानघाट पर

Volume 7, Issue4, (October-December 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ले कर जातें हैं। उनका मानना है कि ऐसा करने से उन्हें द्वारा हिजड़ा बनने का दुःख नहीं भोगना पड़ेगा। संभव हो सकता है कि ऐसी और अनेक मान्यतांए हो। जिसकी अभी खोज करनी बाकी हो।

**सामाजिक परिसिथितयाँ** : – हमारा समाज किन्नरों से आशीर्वाद लेने के लिए तो तत्पर हैं। लेकिन समाजउन्हें किसी भी रूप में अपने मध्य स्वीकार नहीं करना चाहता। किन्नरों की शरीरिक भिन्नता उन्हें समाज से काट देती है। उन्हें तीसरी दुनिया के लोग समझा जाता है। इसी की ही एक उदारहरण प्रदीप जी के उपन्यास 'तीसरी ताली' में आनन्दी की निकिता और गौतम के विनीता की। आनन्दी ने अपनी निकिता को प्यार दुलार से पाला था। उसे वह खूब पढ़ाना चाहती थी, लेकिन जब वह स्कूल में दाखिल करवाने गयी तो उन्हें उत्तर मिला कि ''जेण्डर स्पष्ट न होने के कारण हम दाखिला नहीं दे सकते हैं....यह स्कूल सामान्य बच्चों के लिए है, बीच वाले बच्चों को दाखिला देने से स्कूल का माहौल खराब हो जाता है।''[8] उसकी लाख कोशिश भी विफल रही।इसी प्रकार जब विनीता का पता चला के इसका पुरुषांग विकसित नहीं हुआ। डाक्टरों ने कहा ''बच्चे में स्त्री और पुरुष दोंनो के लक्षण हैं। माँ के पेट में ग्यारहवें सप्ताह सेक्सुअल आर्गन को विकसित करने वाले हारमोन्स अपनी भूमिका पूरी नहीं कर पाये।''[9] उसकी माँ और बहने उससे कटे–कटे रहने लगी थी। उसके पिता गौतम उखड़े–उखड़े रहने लगे थे।

**किन्नर समाज की समस्याओं का अंकन** :–प्रदीप जी ने अपने उपन्यास में अनेक समस्याओं का अंकन किया है, जिसमें सामाजिक तिरस्कार, प्रशासनिक भेद–भाव, वेश्यावृति, भिक्षावृति शरीरिक शोषण इत्यादि। यदी कोई दुःस्साहस करके हिजड़े बच्चों को कुछ बनाना, पढ़ाना चाहते हैं, तो सामाजिक पक्ष, मान–मार्यदा उनका गला दबाने लगती है। रूढ़िवादी लोग और सरकारी कायदे का डर उनके सामने एक पत्थर की तरह रास्ते में आ जाता है। दुनिया में बहुत देशों में चाहे समलैंगिक सम्बन्धों को कानूनी मान्यता मिल गई है, लेकिन हमारे देश में अभी भी समाज असहज और विकलांग सोच का शिकार है। इसकी उदाहरण किसन और बाबी हैं। लेखक ने यह उदाहरण दे कर समाज की मोह बोलती तस्वीर पेश की है। बाबी और किसन के आपस में सबंध होते हैं, परन्तु लोगों का कहना है कि इसका उनके गाँव में बुरा असर पढ़ेगा। जिस के लिए ''पंचायती आदेश के तहत गाँ के जवान छोरों ने किसन के घर में डीजल डालकर आग लगा दी थी।''[10] और उनकी वही समाधि बना दी गई। सहजता के साथ इस घटना को इन्जाम दे दिया जाता है।

गरीबमरी और पैसे कमाने के लालच में हिजड़े वेश्यावृति को भी अपना पेशा बना लेते हैं। इसकी उदाहरण पिंकी और रेखा चितकबरी है। जिसका बहुत बड़ा धंधा है। वह ऑनलाइन ही माल–तोल करती है। मोटी कमाई के लिए लोण्ड़ों को भी अपने गैंग में रख लेती है। दूसरा

Volume 7, Issue4, (October-December 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

भिक्षावृति की सबसे बड़ी उदाहरण लेखक ने कला मौसी की दी है। जिसे हिजड़े वृद होने के कारण मौसी कहते हैं। वृद होने के कारण नाच–गा नहीं सकती वह माँग कर ही अपना पेट भरती है।

**किन्नरों की कुछ कर दिखाने की प्रवृति :–** प्रदीप जी के उपन्यास 'तीसरी ताली' में कुछ ऐसे उदाहरण प्रसतुत हुए हैं कि हमें हिजड़े के नैतिक तथा अनैतिक दोनों पहलूओं का पता चलता है।

इस तीसरी दुनियाँ के लोगों को उचित अवसर प्रदान किए जाए, तो यह ऊँचाइयों के छू लेने की शक्ति रखते हैं।समाज में अपना अस्तित्व कायम कर सकते हैं। जैसे विनीता को उसके पिता गौतम ने उसे ब्यूटीपार्लर का काम सिखाया था। उसने उचित अवसर का मौका उठाकर खूब नाम और पैसा कमाया। विनीता ने अपने ब्यूटीशियन वाले अड्डे अनेक स्थानों में 'गे वर्ल्ड' नाम से खोल दिए थे। उसमें केवल हिजड़े ही आ सकते थे। विनीता अब पेज थ्री के सर्किल में आ गई थी। लोग उनके पीछे फोटो खिचवाने के लिए घूमते थे ''दुसरे अपनी तस्वीर छपवाने के लिए उसके आसपास मंडराते थे। कैमरामैन उसे 'मैडम प्लीज़' कहकर पोज़ देने के लिए रोकते थे। वह बहुत दूर निकल चुकी थी।''[11] विनीता को भूषाचार में निर्णायक के लिए आमंत्रित किया जाता था। धंधा चौपट होते देख विनीता ने एक दूरदर्शन धारावाहिक 'द छक्का' नामक शुरू कर दिया था। विनीता ने दुनिया में अलग स्थान कायम कर लिया था।

इसी प्रकार विजय ने भी अपने आप को सथापित करने की कोशिश की। वह फोटोग्राफी करके अपना नाम कमा रहा था। विजय भावुक होकर कहता है कि ''दुनिया के दंश अपने–आपको बचाने के लिए मैंने लगातार लड़ाई लड़ी और खुद को स्थापित किया। मैं नाचना–गाना नहीं, नाम कमाना चाहता था। भगवान राम के उस मिथक को झुठलाना चाहता था, जिसके कारण तीसरी योनि के लोग नाचने–गाने के लिए अभिशप्त हैं...परिवार और समाज से वेदखल हैं।''[12]

दुसरी उदाहरण लेखक ने मण्किलिता की दी है। वह बचपन में स्कूल के बच्चों के द्वारा उसे नंगा करके 'छक्का–छक्का' कह कर उसका मज़ाक बनाया गया। जिस लिए उसे स्कूल छोड़ना पढता है। वह अपनी मेहनत और लगन से कत्थक सीखती है। मणि गन्धर्व महाविद्यालय में डांस डायरेक्टर बन कर सामने आती है।

तीसरी उदाहरण प्रदीप जी ने सुप्रिया कपूर की दी है। जो मशहूर डांसर हो कर समाज के सामने आती है। उसे पाने के लिए लोग पागल हो रहे होते हैं। वह कहती है ''अपनी तीसरी योनि में होने की बात को मैंने आज तक छिपाये रखा, क्योंकि मैं जानती थी कि उस रूप में

Volume 7, Issue4, (October-December 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

समाज मुझे कभी स्वीकार नहीं करेगा। आज मैं एक मुकाम तक पहुँच गई हूँ और समाज से भिड़ सकती हूँ तो अपनी इस पीड़ा का खुलासा करने की हिम्मत भी मेरे अन्दर आ गई है।''[13]

**सारांश** :–प्रदीप सौरभ ने किन्नर समाज के विभिन्न रूपों, मर्यादाओं, रीति–रिवाजों, उनके जीविन से जुड़ी विभिन्न समस्याओं का मार्मिक चित्रण किया है। तीसरी योनि के लोगों के लिए प्ररेणास्त्रोत प्रस्तुत करने की भी कोशिश की है।यदि उन्हें शुभ अवसर प्रदान किए जाए तो किन्नर समाज जो सदियों से प्रताड़ित होता आ रहा है, हमारे समाज का हिस्सा बन सकता है। उनके अन्तर भी मनुष्य का हृदय और दिल धड़कता है। वह भी अपने आस्तित्व के अनवेषण में जी रहें है। किन्नरों के हित के लिए चाहे कई कानून बनें हैं। पर इन कानूनों का व्यावहारिक रूप से अमल नहीं हो पाया है। यदि किन्नर समाज के विषय को संवेदना का विषय बनाया जाए। समाज और किन्नरों के बीच सहज–संवाद सेतु का निर्माण किया जाए। तभी किन्नर भी अपने आत्म–उत्थान के लिए प्रयत्न करेंगे। तब ही इस अनूठे दर्द से किन्नर समाज मुक्त हो सकता है।

**सन्दर्भ सूची :**

**1 'तीसरी ताली' प्रदीप सौरभ, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली**

**प्रथम संस्करण 2018** ,पृष्ठ संख्या – 35

2 वही पृष्ठ संख्या – 56

3 वही पृष्ठ संख्या – 68

4 वही पृष्ठ संख्या – 45

5 वही पृष्ठ संख्या – 56

6 वही पृष्ठ संख्या – 187

7 वही पृष्ठ संख्या – 49

8 वही पृष्ठ संख्या – 42

9 वही पृष्ठ संख्या – 41

10 वही पृष्ठ संख्या – 95

Volume 7, Issue4, (October-December 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

11 वही पृष्ठ संख्या – 117

12 वही पृष्ठ संख्या – 95

13 वही पृष्ठ संख्या – 177